जपजी साहिब

With Correct Pronunciation

SIKHIZM .COM

SIKHIZM .COM

ੴ सत नाम करता पुरख निरभओ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुर प्रसाद ॥

॥ जप ॥

आद सच जुगाद सच ॥

है भी सच नानक होसी भी सच ॥१॥

सोचै सोच न होवई जे सोची लख वार ॥

चुपै चुप न होवई जे लाए रहा लिव तार ॥

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥

सहस सिआणपा लख होहे त इक न चलै नाल ॥

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पाल ॥

हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल ॥१॥

हुकमी होवन आकार हुकम न कहिआ जाई ॥

हुकमी होवन जीअ हुकम मिलै वडिआई ॥

हुकमी उतम नीच हुकम लिख दुख सुख पाईअह ॥

इकना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअह ॥

हुकमै अंदर सभ को बाहर हुकम न कोए ॥

नानक हुकमै जे बुझै त हओमै कहै न कोए ॥२॥

गावै को ताण होवै किसै ताण ॥

गावै को दात जाणै नीसाण ॥

गावै को गुण वडिआईआ चार ॥

गावै को विद्या विखम वीचार ॥

गावै को साज करे तन खेह ॥

गावै को जीअ लै फिर देह ॥

गावै को जापै दिसै दूर ॥

गावै को वेखै हादरा हदूर ॥

कथना कथी न आवै तोट ॥

कथ कथ कथी कोटी कोट कोट ॥

SIKHIZM .COM

देदा दे लैदे थक पाहे ॥

जुगा जुगंतर खाही खाहे ॥

हुकमी हुकम चलाए राहो ॥

नानक विगसै वेपरवाहो ॥३॥

साचा साहिब साच नाए भाखिआ भाओ अपार ॥

आखह मंगह देहे देहे दात करे दातार ॥

फेर कि अगै रखीऐ जित दिसै दरबार ॥

मुहौ कि बोलण बोलीऐ जित सुण धरे प्यार ॥

अमृत वेला सच नाओ वडिआई वीचार ॥

करमी आवै कपड़ा नदरी मोख दुआर ॥

नानक एवै जाणीऐ सभ आपे सचिआर ॥४॥

थापेआ न जाए कीता न होए ॥

आपे आप निरंजन सोए ॥

जिन सेवेआ तिन पाया मान ॥

नानक गावीऐ गुणी निधान ॥

गावीऐ सुणीऐ मन रखीऐ भाओ ॥

दुख परहर सुख घर लै जाए ॥

गुरमुख नादं गुरमुख वेदं गुरमुख रहेआ समाई ॥

गुर ईसर गुर गोरख बरमा गुर पारबती माई ॥

जे हओ जाणा आखा नाही कहणा कथन न जाई ॥

गुरा इक देहे बुझाई ॥

सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ॥५॥

तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाए करी ॥

जेती सिरठि उपाई वेखा विण करमा कि मिलै लई ॥

मत विच रतन जवाहर माणेक जे इक गुर की सिख सुणी ॥

गुरा इक देह बुझाई ॥

सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होए ॥
नवा खंडा विच जाणीऐ नाल चलै सभ कोए ॥
चंगा नाओ रखाए कै जस कीरत जग लेए ॥
जे तिस नदर न आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदर कीट कर दोसी दोस धरे ॥
नानक निरगुण गुण करे गुणवंतेआ गुण दे ॥
तेहा कोए न सुझई जि तिस गुण कोए करे ॥७॥

SIKHIZM
.COM

सुणिऐ सिध पीर सुर नाथ ॥
सुणिऐ धरत धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहे न सकै काल ॥
नानक भगता सदा विगास ॥
सुणिऐ दूख पाप का नास ॥८॥

सुणिऐ ईसर बरमा इंद ॥

सुणिऐ मुख सालाहण मंद ॥

सुणिऐ जोग जुगत तन भेद ॥

सुणिऐ सासत सिमृत वेद ॥

नानक भगता सदा विगास ॥

सुणिऐ दूख पाप का नास ॥९॥

सुणिऐ सत संतोख ज्ञान ॥

सुणिऐ अठसठ का इसनान ॥

सुणिऐ पड़ पड़ पावहे मान ॥

सुणिऐ लागै सहज ध्यान ॥

नानक भगता सदा विगास ॥

सुणिऐ दूख पाप का नास ॥१०॥

SIKHIZM.COM

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥

सुणिऐ सेख पीर पातेसाह ॥

सुणिऐ अंधे पावहे राहो ॥

सुणिऐ हाथ होवै असगाहो ॥

नानक भगता सदा विगास ॥

सुणिऐ दूख पाप का नास ॥११॥

मंने की गत कही न जाए ॥

जे को कहै पिछै पछुताए ॥

कागद कलम न लिखणहार ॥

मंने का बहे करन वीचार ॥

ऐसा नाम निरंजन होए ॥

जे को मंन जाणै मन कोए ॥१२॥

SIKHIZM.COM

मंनै सुरत होवै मन बुध ॥

मंनै सगल भवण की सुध ॥

मंनै मुहे चोटा ना खाए ॥

मंनै जम कै साथ न जाए ॥

अैसा नाम निरंजन होए ॥

जे को मंन जाणै मन कोए ॥१३॥

मंनै मारग ठाक न पाए ॥

मंनै पत सिओ परगट जाए ॥

मंनै मग न चलै पंथ ॥

मंनै धरम सेती सनबंध ॥

अैसा नाम निरंजन होए ॥

जे को मंन जाणै मन कोए ॥१४॥

मंनै पावहे मोख दुआर ॥

मंनै परवारै साधार ॥

मंनै तरै तारे गुर सिख ॥

मंनै नानक भवहे न भिख ॥

अैसा नाम निरंजन होए ॥

जे को मंन जाणै मन कोए ॥१५॥

पंच परवाण पंच परधान ॥

पंचे पावह दरगह मान ॥

पंचे सोहह दर राजान ॥

पंचा का गुर एक ध्यान ॥

जे को कहै करै वीचार ॥

करते कै करणै नाही सुमार ॥

धौल धरम दया का पूत ॥

संतोख थाप रखेआ जिन सूत ॥

जे को बुझै होवै सचिआर ॥

धवलै उपर केता भार ॥

धरती होर परै होर होर ॥

तिस ते भार तलै कवण जोर ॥

जीअ जात रंगा के नाव ॥

सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

एहो लेखा लिख जाणै कोए ॥

लेखा लिखेआ केता होए ॥

केता ताण सुआलिहो रूप ॥

केती दात जाणै कौण कूत ॥

कीता पसाओ एको कवाओ ॥

तिस ते होए लख दरीआओ ॥

कुदरत कवण कहा वीचार ॥

वारेआ न जावा एक वार ॥

जो तुध भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामत निरंकार ॥१६॥

असंख जप असंख भाओ ॥

असंख पूजा असंख तप ताओ ॥

असंख ग्रंथ मुख वेद पाठ ॥

असंख जोग मन रहहे उदास ॥

असंख भगत गुण ज्ञान वीचार ॥

असंख सती असंख दातार ॥

असंख सूर मुह भख सार ॥

असंख मोन लिव लाए तार ॥

कुदरत कवण कहा वीचार ॥

वारेआ न जावा एक वार ॥

जो तुध भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामत निरंकार ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥

असंख चोर हरामखोर ॥

असंख अमर कर जाहे जोर ॥

असंख गलवढ हत्या कमाहे ॥

असंख पापी पाप कर जाहे ॥

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहे ॥

असंख मलेछ मल भख खाहे ॥

असंख निंदक सिर करह भार ॥

नानक नीच कहै वीचार ॥

वारेआ न जावा एक वार ॥

जो तुध भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामत निरंकार ॥१८॥

असंख नाव असंख थाव ॥

अगम अगम असंख लोअ ॥

असंख कहहे सिर भार होए ॥

अखरी नाम अखरी सालाह ॥

अखरी ज्ञान गीत गुण गाह ॥

अखरी लिखण बोलण बाण ॥

अखरा सिर संजोग वखाण ॥

जिन एहे लिखे तिस सिर नाहे ॥

जिव फुरमाए तेव तेव पाहे ॥

जेता कीता तेता नाओ ॥

विण नावै नाही को थाओ ॥

कुदरत कवण कहा वीचार ॥

वारेआ न जावा एक वार ॥

जो तुध भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामत निरंकार ॥१९॥

भरीऐ हथ पैर तन देह ॥

पाणी धोतै उतरस खेह ॥

मूत पलीती कपड़ होए ॥

दे साबूण लईऐ ओहो धोए ॥

भरीऐ मत पापा कै संग ॥

ओहो धोपै नावै कै रंग ॥

पुंनी पापी आखण नाहे ॥

कर कर करणा लिख लै जाहो ॥

आपे बीज आपे ही खाहो ॥

नानक हुकमी आवहो जाहो ॥२०॥

SIKHIZM
.COM

तीरथ तप दया दत दान ॥

जे को पावै तेल का मान ॥

सुणेआ मंनिआ मन कीता भाओ ॥

अंतरगत तीरथ मल नाओ ॥

सभ गुण तेरे मै नाही कोए ॥

विण गुण कीते भगत न होए ॥

सुअसत आथ बाणी बरमाओ ॥

सत सुहाण सदा मन चाओ ॥

कवण सु वेला वखत कवण कवण थित कवण वार ॥

कवण सि रुती माहो कवण जित होआ आकार ॥

वेल न पाईआ पंडती जे होवै लेख पुराण ॥

वखत न पाइओ कादीआ जे लिखन लेख कुराण ॥

थित वार ना जोगी जाणै रुत माहो ना कोई ॥

जा करता सिरठी कओ साजे आपे जाणै सोई ॥

किव कर आखा किव सालाही किओ वरनी किव जाणा ॥

नानक आखण सभ को आखै इक दू इक सिआणा ॥

वडा साहिब वडी नाई कीता जा का होवै ॥

नानक जे को आपौ जाणै अगै गया न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

ओड़क ओड़क भाल थके वेद कहन इक वात ॥

सहस अठारह कहन कतेबा असुलू इक धात ॥

लेखा होए त लिखीऐ लेखै होए विणास ॥

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आप ॥२२॥

सालाही सालाहे एती सुरत न पाईआ ॥

नदीआ अतै वाह पवह समुंद न जाणीअहे ॥

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती माल धन ॥

कीड़ी तुल न होवनी जे तिस मनहो न वीसरहे ॥२३॥

SIKHIZM
.COM

अंत न सिफती कहण न अंत ॥

अंत न करणै देण न अंत ॥

अंत न वेखण सुणण न अंत ॥

अंत न जापै किआ मन मंत ॥

अंत न जापै कीता आकार ॥

अंत न जापै पारावार ॥

अंत कारण केते बिललाहे ॥

ता के अंत न पाए जाहे ॥

एहो अंत न जाणै कोए ॥

बहुता कहीऐ बहुता होए ॥

वडा साहिब ऊचा थाओ ॥

ऊचे उपर ऊचा नाओ ॥

एवड ऊचा होवै कोए ॥

तिस ऊचे कओ जाणै सोए ॥

जेवड आप जाणै आप आप ॥

नानक नदरी करमी दात ॥२४॥

SIKHIZM .COM

बहुता करम लिखिआ ना जाए ॥

वडा दाता तेल न तमाए ॥

केते मंगह जोध अपार ॥

केतेआ गणत नही वीचार ॥

केते खप तुटहे वेकार ॥

केते लै लै मुकर पाहे ॥

केते मूरख खाही खाहे ॥

केतेआ दूख भूख सद मार ॥

एहे भि दात तेरी दातार ॥

बंद खलासी भाणै होए ॥

होर आख न सकै कोए ॥

जे को खाएक आखण पाए ॥

ओहो जाणै जेतीआ मुहे खाए ॥

आपे जाणै आपे देए ॥

आखह से भे केई केए ॥

जिस नो बखसे सिफत सालाह ॥

नानक पातसाही पातसाहो ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

अमुल आवह अमुल लै जाहे ॥

अमुल भाए अमुला समाहे ॥

अमुल धरम अमुल दीबाण ॥

अमुल तुल अमुल परवाण ॥

अमुल बखसीस अमुल नीसाण ॥

अमुल करम अमुल फुरमाण ॥

अमुलो अमुल आखिआ न जाए ॥

आख आख रहे लिव लाए ॥

आखहे वेद पाठ पुराण ॥

आखहे पड़े करह वखिआण ॥

आखहे बरमे आखहे इंद ॥

आखहे गोपी तै गोविंद ॥

आखहे ईसर आखहे सिध ॥

आखहे केते कीते बुध ॥

आखहे दानव आखहे देव ॥

आखहे सुर नर मुन जन सेव ॥

केते आखहे आखण पाहे ॥

केते कह कह उठ उठ जाहे ॥

एते कीते होर करेहे ॥

ता आख न सकह केई केए ॥

जेवड भावै तेवड होए ॥

नानक जाणै साचा सोए ॥

जे को आखै बोलुविगाड़ ॥

ता लिखीऐ सिर गावारा गावार ॥२६॥

सो दर केहा सो घर केहा जित बह सरब समाले ॥

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥

केते राग परी सिओ कहीअन केते गावणहारे ॥

गावह तुहनो पौण पाणी बैसंतर गावै राजा धरम दुआरे ॥

गावह चित गुपत लिख जाणह लिख लिख धरम वीचारे ॥

गावह ईसर बरमा देवी सोहन सदा सवारे ॥

गावह इंद इदासण बैठे देवतेआ दर नाले ॥

गावह सिध समाधी अंदर गावन साध विचारे ॥

गावन जती सती संतोखी गावह वीर करारे ॥

गावन पंडित पड़न रखीसर जुग जुग वेदा नाले ॥

गावहे मोहणीआ मन मोहन सुरगा मछ पयाले ॥

गावन रतन उपाए तेरे अठसठ तीरथ नाले ॥

गावहे जोध महाबल सूरा गावह खाणी चारे ॥

गावहे खंड मंडल वरभंडा कर कर रखे धारे ॥

सेई तुधनो गावह जो तु भावन रते तेरे भगत रसाले ॥

होर केते गावन से मै चित न आवन नानक क्या वीचारे ॥

सोई सोई सदा सच साहिब साचा साची नाई ॥

है भी होसी जाए न जासी रचना जिन रचाई ॥

रंगी रंगी भाती कर कर जिनसी माया जिन उपाई ॥

कर कर वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥

जो तिस भावै सोई करसी हुकम न करणा जाई ॥

सो पातसाहो साहा पातसाहिब नानक रहण रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोख सरम पत झोली ध्यान की करह बिभूत ॥

खिंथा काल कुआरी काया जुगत डंडा परतीत ॥

आई पंथी सगल जमाती मन जीतै जग जीत ॥

आदेस तिसै आदेस ॥

आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥२८॥

SIKHIZM
.COM

भुगत ज्ञान दया भंडारण घट घट वाजह नाद ॥

आप नाथ नाथी सभ जा की रिध सिध अवरा साद ॥

संजोग विजोग दुए कार चलावहे लेखे आवहे भाग ॥

आदेस तिसै आदेस ॥

आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥२९॥

एका माई जुगत विआई तेन चेले परवाण ॥

इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीबाण ॥

जिव तिस भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाण ॥

ओहो वेखै ओना नदर न आवै बहुता एहो विडाण ॥

आदेस तिसै आदेस ॥

आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥३०॥

आसण लोए लोए भंडार ॥

जो किछ पाया सु एका वार ॥

कर कर वेखै सिरजणहार ॥

नानक सचे की साची कार ॥

आदेस तिसै आदेस ॥

आद अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥३१॥

इक दू जीभौ लख होहे लख होवह लख वीस ॥

लख लख गेड़ा आखीअह एक नाम जगदीस ॥

एत राहे पत पवड़ीआ चड़ीऐ होए इकीस ॥

सुण गला आकास की कीटा आई रीस ॥

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखण जोर चुपै नह जोर ॥

जोर न मंगण देण न जोर ॥

जोर न जीवण मरण नह जोर ॥

जोर न राज माल मन सोर ॥

जोर न सुरती ज्ञान वीचार ॥

जोर न जुगती छुटै संसार ॥

जिस हथ जोर कर वेखै सोए ॥

नानक उतम नीच न कोए ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥

पवण पाणी अगनी पाताल ॥

तिस विच धरती थाप रखी धरम साल ॥

तिस विच जीअ जुगत के रंग ॥

तिन के नाम अनेक अनंत ॥

करमी करमी होए वीचार ॥

सचा आप सचा दरबार ॥

तिथै सोहन पंच परवाण ॥

नदरी करम पवै नीसाण ॥

कच पकाई ओथै पाए ॥

नानक गया जापै जाए ॥३४॥

धरम खंड का एहो धरम ॥

ज्ञान खंड का आखहो करम ॥

SIKHIZM .COM

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥

केते बरमे घाड़त घड़ीअह रूप रंग के वेस ॥

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥

केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥

केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥

केते देव दानव मुन केते केते रतन समुंद ॥

केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥

केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंत न अंत ॥३५॥

SIKHIZM .COM

ज्ञान खंड महे ज्ञान परचंड ॥

तिथै नाद बिनोद कोड अनंद ॥

सरम खंड की बाणी रूप ॥

तिथै घाड़त घड़ीऐ बहुत अनूप ॥

ता कीआ गला कथीआ ना जाहे ॥

जे को कहै पिछै पछुताए ॥

तिथै घड़ीअै सुरत मत मन बुध ॥
तिथै घड़ीअै सुरा सिधा की सुध ॥३६॥

करम खंड की बाणी जोर ॥
तिथै होर न कोई होर ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन मह राम रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहे ॥
ता के रूप न कथने जाहे ॥
ना ओहे मरहे न ठागे जाहे ॥
जिन कै राम वसै मन माहे ॥
तिथै भगत वसह के लोअ ॥
करह अनंद सचा मन सोए ॥
सच खंड वसै निरंकार ॥
कर कर वेखै नदर निहाल ॥

तिथै खंड मंडल वरभंड ॥

जे को कथै त अंत न अंत ॥

तिथै लोअ लोअ आकार ॥

जिव जिव हुकम तिवै तिव कार ॥

वेखै विगसै कर वीचार ॥

नानक कथना करड़ा सार ॥३७॥

जत पाहारा धीरज सुनिआर ॥

अहरण मत वेद हथीआर ॥

भओ खला अगन तप ताओ ॥

भांडा भाओ अमृत तित ढाल ॥

घड़ीऐ सबद सची टकसाल ॥

जिन कओ नदर करम तिन कार ॥

नानक नदरी नदर निहाल ॥३८॥

SIKHIZM.COM

सलोक ॥

पवण गुरू पाणी पिता माता धरत महत ॥

दिवस रात दुए दाई दाया खेलै सगल जगत ॥

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरम हदूर ॥

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूर ॥

जिनी नाम धिआया गए मसकत घाल ॥

नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल ॥१॥

SIKHIZM
.COM